गिजुभाई का गुलदस्ता-10

कोयल

समग्र शिक्षा, राजस्थान
2020-21

चोर मचाए शोर

गिजुभाई बधेका

अनुवाद, प्रस्तुति और चित्र
आबिद सुरती

नेहरू बाल पुस्तकालय

गिजुभाई का गुलदस्ता-10

चोर मचाए शोर

गिजुभाई बधेका

अनुवाद, प्रस्तुति और चित्र
आबिद सुरती
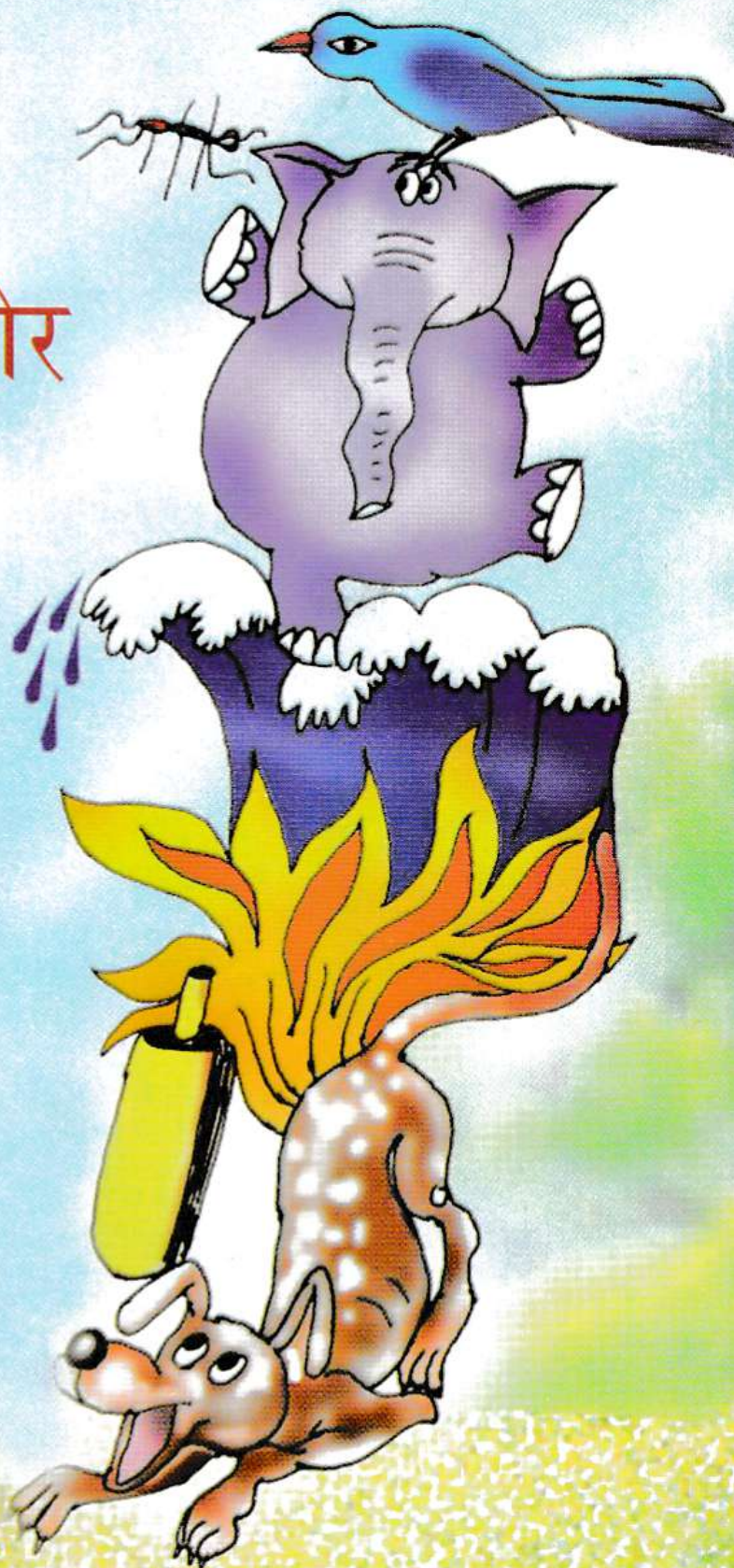
nbt.india
एकः सूते सकलम्
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
NATIONAL BOOK TRUST, INDIA

चूहा बन गया शेर

बुद्धि हो तो ऐसी

सोना और रूपा

लहुलुहान नदी

अकल बड़ी या भैंस

चोर मचाए शोर

नल देव और जल देव

ऊंट का पैर सड़निया

कौवा बोला कांव कांव कांव

शिक्षक भाई-बहनों से

लीजिए, ये हैं बाल-कथाएं। आप बच्चों को इन्हें सुनाइए। बच्चे इनको खुशी-खुशी और बार-बार सुनेंगे। आप इन्हें रसीले ढंग से कहिए, कहानी सुनाने के लहजे से कहिए। कहानी भी ऐसी चुनें, जो बच्चों की उम्र से मेल खाती हो। भैया मेरे, एक काम आप कभी न करना। ये कहानियां आप बच्चों को रटाना नहीं। बल्कि, पहले आप खुद अनुभव करें कि ये कहानियां जादू की छड़ी-सी हैं।

यदि आपको बच्चों के साथ प्यार का रिश्ता जोड़ना है तो उसकी नींव कहानी से डालें। यदि आपको बच्चों का प्यार पाना है तो कहानी भी एक जरिया है। पंडित बन कर कभी कहानी नहीं सुनाना। कील की तरह बोध ठोकने की कोशिश नहीं करना। कभी थोपना भी नहीं। यह तो बहती गंगा है। इसमें पहले आप डुबकी लगाएं, फिर बच्चों को भी नहलाएं।

गिजुभाई

चूहा बन गया शेर

एक था चूहा। एक रोज वह यों ही टहल रहा था कि रास्ते में उसे खादी का एक टुकड़ा मिला। सामने ही दरजी की दुकान थी। उसने जा कर कहा, 'मियां, जरा इस खद्दर की एक टोपी तो सी दो।' दरजी ने अगल-बगल देख कर हैरत जताई, 'यह कौन बोल रहा है?' चूहे ने कहा, 'मियां, नीचे देखो। मैं चूहा बोल रहा हूं। फटाफट एक टोपी सी दो।' दरजी बोला, 'मुफ्त में? चल, रास्ता नाप। वरना एक झापड़ ऐसा मारूंगा कि तू पापड़ बन जाएगा।'

चूहा बमका, 'मियां, बकवास बंद करो और फौरन टोपी सी दो। वरना..

कचहरी में जाऊंगा सिपाही को बुलाऊंगा
हड्डी-पसली तुड़वाऊंगा मुरब्बा बनाऊंगा'

यह सुन कर दरजी कांप उठा। बोला, 'हुजूर, ऐसा गजब मत करना। लाओ, मुझे कपड़ा दो। मैं अभी टोपी सी देता हूं।'

चंद मिनटों में टोपी तैयार हो गई। चूहा टोपी पहन कर शान से आगे बढ़ा। अभी कुछ ही कदम चला था कि उसे कसीदेकार की दुकान नजर आई। चूहे ने कहा, 'श्रीमानजी, मेरी टोपी में थोड़े बेलबूटे तो काढ़ दो।' कसीदेकार ने कहा, 'मुफ्त में? पागल है क्या? यहां से फौरन चलता बन, वरना घुसा दूंगा यह सूई तो तू चिल्लाएगा, उई-उई।'

चूहा बमका,
'बकवास बंद करो और फटाफट कसीदा काढ़ दो। वरना...

कचहरी में जाऊंगा सिपाही को बुलाऊंगा
हड्डी-पसली तुड़वाऊंगा मुरब्बा बनाऊंगा'

यह सुन कसीदेकार बुरी तरह डर गया। बोला, 'हुजूर, ऐसा गजब मत करना। मुझे टोपी दो। मैं अभी बेलबूटे काढ़ देता हूं।' फिर तो कसीदा कढ़ी टोपी पहन कर चूहा ठाट से आगे बढ़ा। कुछ कदम चलने पर मोतीवाले की दुकान दिखाई दी। चूहे ने कहा, 'मिस्टर, मेरी टोपी में थोड़े मोती तो लगा दो।' मोतीवाला चिढ़ कर बोला, 'मुफ्त में? क्या यह दुकान तेरे बाप की है! चल, दफा हो जा यहां से। वरना चारों टांगें तोड़ कर तेरी टोपी में

रख दूंगा।'

चूहा बमका, 'बकवास बंद करो और फटाफट मोती टांक दो। वरना...

कचहरी में जाऊंगा सिपाही को बुलाऊंगा
हड्डी-पसली तुड़वाऊंगा मुरब्बा बनाऊंगा'

यह सुन मोतीवाले की टांगें डगमगा गईं। बोला, 'हुजूर, ऐसा गजब मत करना। लाओ, मुझे टोपी दो। मैं अभी मोती लगा देता हूं।'

फिर तो चूहा बेलबूटे और मोतियोंवाली टोपी पहन कर आगे बढ़ा। अब तो सारे गांव में उसकी धौंस जम गई थी। रास्ते में उसे एक डमरू बेचने वाला मिला। चूहे ने उससे डमरू मांगा। डमरूवाले ने चूंचपड़ किए बिना डमरू तुरंत उसके हाथ में थमा दिया। अब चूहा सिर पर टोपी डाल डमरू बजाता हुआ आगे बढ़ा :

ढम ढम ढमाक ढम ढम ढमाक
ढम ढम ढमाक ढम ढम ढमाक...

चूहा नाचता, गाता, बजाता हुआ राजा के महल के आगे से गुजर रहा था। राजा झरोखे में खड़ा था। उसे देख चूहा इठला कर बोला :

वैसे तो राजा की टोपी बढ़िया लागे
लेकिन मेरी टोपी के आगे घटिया लागे
ढम ढम ढमाक ढम ढम ढमाक...

यह सुन राजा को आ गया गुस्सा। वह बोला, 'हमारे ताज को चूहा टोपी कहता है और वह भी घटिया! छीन लो उनकी टोपी।' सिपाहियों ने चूहे की टोपी झपट ली। अब चूहा डमरू बजाते हुए गाने लगा :

कंगला है इस देश का राजा, मेरी टोपी छीन ली
क्या करेगी अब प्रजा यहां की, मेरी टोपी छीन ली
ढम ढम ढमाक ढम ढम ढमाक...

राजा चिल्लाया, 'क्या हम कंगले हैं? लौटा दो उसकी टोपी!' सिपाहियों ने तुरंत आदेश का पालन किया। अब चूहे ने नया राग छोड़ा :

कहलाता है शेरसिंह पर चूहे से भी डरता है
कैसा है यह महाराजा जो डर-डर के जीता है
ढम ढम ढमाक ढम ढम ढमाक...

सच्चाई सुन कर राजा पगला गया। वह अपने ही बाल नोचने लगा। चूहा अपनी टोपी थोड़ी तिरछी करके नाचता-गाता-बजाता हुआ आगे बढ़ गया।

ढम ढम ढमाक ढम ढम ढमाक
ढम ढम ढमाक ढम ढम ढमाक...
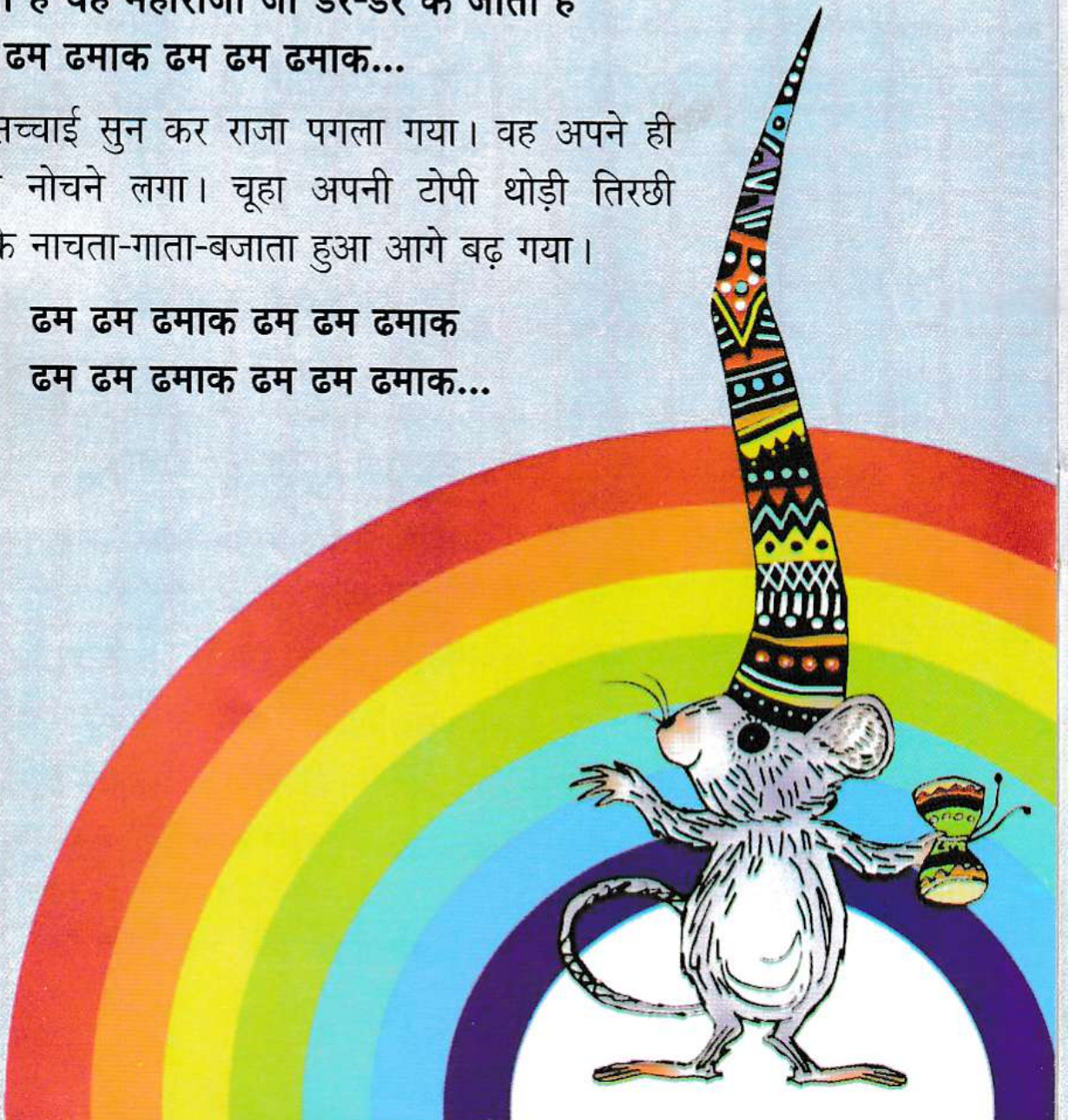
बुद्धि हो तो ऐसी

एक थी राजकुमारी। वह जितनी सुंदर थी, उतनी चतुर भी थी। वह पढ़ी-लिखी थी। संस्कार उसमें ठूंस-ठूंस कर भरे हुए थे। कई बार तो राजा भी उसकी सलाह से न्याय करता था। रानी के लिए भी उसके बोल कीमती थे। दीन-दुखियों को राजकुमारी का बड़ा सहारा था। रोगियों और बीमारों की सेवा वह खुद करती थी। साधु-संतों को उसके सदाव्रत में भोजन मिलता था। राजा से ले कर रंक तक हर कोई उसे चाहता था। सब उसकी प्रशंसा के पुल बांधते थे।

एक रोज उस नगर में चार यात्री आए। चारों बड़े पंडित थे। उन्होंने राजकुमारी की चतुराई के किस्से सुने। वे सोचने लगे...ऐसी विद्वान स्त्री से सत्संग करना चाहिए। लेकिन यह मुमकिन कैसे हो? एक ने कहा, 'मैं राजकुमारी के लंगर में जाऊंगा। वहां खाना भी मिलेगा और राजकुमारी भी।' वह लंगर में पहुंचा। साधु-संतों की पंगत में वह भी भोजन करने बैठ गया। तभी वहां राजकुमारी आई और पंडित की ओर देख कर बोली, 'यह लंगर साधु-संतों के लिए है। बताइए, आप कौन हैं?' पंडित बोला, 'जी...मैं एक मुसाफिर हूं।' राजकुमारी ने तुरंत कहा, 'इस संसार में सिर्फ दो ही मुसाफिर हैं। तीसरे आप कहां से आ गए?' पंडित के पास जवाब नहीं था। वह अपने साथियों के पास लौट आया। उन्हें सारी बात बताई। सबको
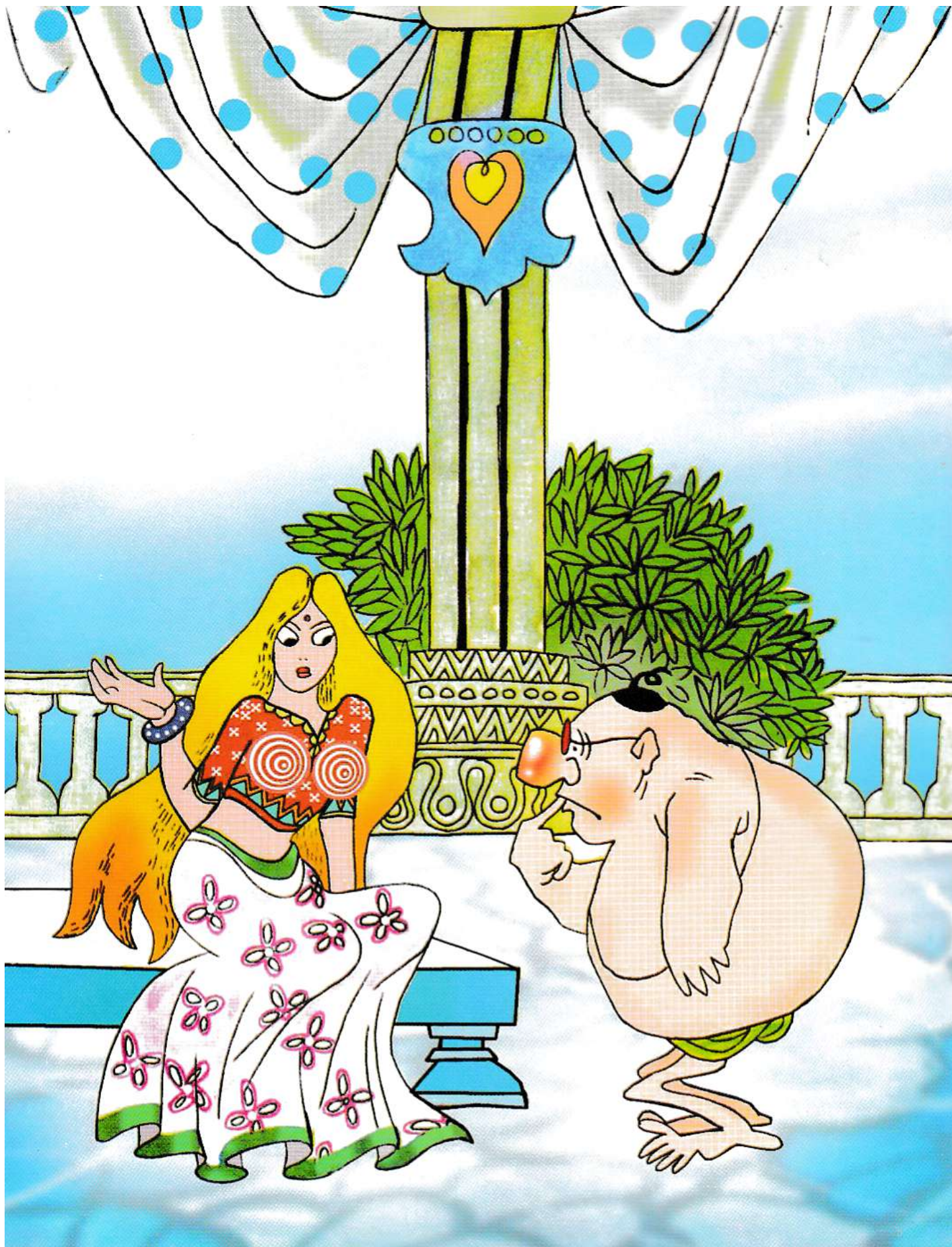
बड़ा ताज्जुब हुआ। दूसरे पंडित ने खड़े होते हुए कहा, 'अब मैं हो कर आता हूं। देखें, वह मुझसे क्या कहती है।'

थोड़ी देर बाद वह लंगर में पहुंचा। वह अभी साधु-संतों की पंगत में बैठा ही था कि राजकुमारी की नजर उस पर ठहरी। उसने तुरंत पंडित से कहा, 'यह लंगर साधु-संतों के लिए है। बताइए, आप कौन हैं?' वह बोला, 'मैं एक गरीब आदमी हूं।' राजकुमारी ने तपाक से कहा, 'इस संसार में सिर्फ दो ही गरीब है। तीसरे आप कहां से आ धमके?' इस पंडित के पास भी जवाब नहीं था। वह अपने साथियों के पास लौट आया और उन्हें सारी बात बताई। सबको बड़ा ताज्जुब हुआ। तब तीसरे पंडित ने खड़े होते हुए कहा, 'अब मैं हो कर आता हूं। देखें, वह मुझसे क्या कहती है।'

थोड़ी देर बाद वह लंगर में पहुंचा। साधु-संतों की पंगत में अभी बैठा ही था कि राजकुमारी की नजर उस पर टिक गई। उसने तुरंत इस तीसरे पंडित से कहा, 'यह लंगर साधु-संतों के लिए है। बताइए, आप कौन हैं?' दम-भर सोच कर वह बोला, 'मैं मर्द हूं।' राजकुमारी ने तपाक से प्रश्न उछाला, 'इस संसार में सिर्फ दो ही मर्द हैं। फरमाइए, तीसरे आप कहां से आ पहुंचे?' इस पंडित के पास भी कोई जवाब नहीं था। वह अपने साथियों के पास लौट आया और उन्हें बात बताई। सबको बड़ा ताज्जुब हुआ। तब चौथे पंडित ने खड़े होते हुए कहा, 'अब तो मुझे ही जाना पड़ेगा। मैं भी जानूं कि वह कितने पानी में है!'

थोड़ी देर बाद वह लंगर में बैठा था और राजकुमारी उससे कह रही थी, 'यह लंगर साधु-संतों के लिए है। बताइए, आप कौन हैं?' वह बोला, 'मैं मूर्ख हूं।' राजकुमारी ने तपाक से पूछा, 'इस संसार में सिर्फ दो ही मूर्ख हैं। अब यह बताएं कि तीसरे आप कहां से टपक पड़े?' इस पंडित के पास भी कोई जवाब नहीं थी। वह अपने साथियों के पास लौट आया।

अब चारों मिल कर राजकुमारी के पास पहुंचे। वे जानना चाहते थे कि उन चार सवालों के जवाब क्या हैं। तभी वहां दीवान सिपाहियों के साथ आया और चारों पंडितों को गिरफ्तार कर ले गया।

दम-भर के लिए राजकुमारी दंग रह गई। फिर राजा के पास पहुंची और कारण पूछा। राजा ने बताया, 'दीवान को पता चला है कि वे चारों जासूस हैं और किसी दूसरे देश से जासूसी करने हमारे राज्य में आए हैं। उनकी सजा फांसी से कम नहीं होगी।' राजकुमारी बोली, 'ठीक है। लेकिन मैंने उनसे चार सवाल पूछे थे। वे उनके जवाब नहीं दे सके। मैं उन सवालों के जवाब सरेआम देना चाहती हूं।' भला राजा को इस में क्या एतराज हो सकता था?

राजकुमारी ने सभा बुलवाई। उन पंडितों को भी दरबार में हाजिर किया गया। उनके हाथों मे हथकड़ियां और पांवों में जंजीरें थीं। वे मुंह लटकाए खड़े थे। पहले राजकुमारी ने वे ही सवाल दरबारियों से पूछे। कोई जवाब नहीं दे सका। तब राजकुमारी खुद जवाब देने लगी। वह बोली, 'इस संसार में सिर्फ दो ही मुसाफिर हैं एक सूरज और दूसरा चंदा।' सब बोले, 'वाह-वाह!' राजकुमारी ने आगे कहा, 'इस संसार में सिर्फ दो ही गरीब हैं एक गाय दूसरी नारी।' सबने कहा, 'कमाल!' राजकुमारी ने तीसरे सवाल का जवाब दिया, 'इस संसार में सिर्फ दो ही सच्चे मर्द हैं एक अर्जुन और दूसरे श्रीकृष्ण।' सब चिल्लाए, 'अद्‌भुत।' अंत में राजकुमारी बोली, 'इस संसार में सिर्फ दो ही मूर्ख हैं एक राजा और दूसरा उनका दीवान, क्योंकि इन निर्दोष पंडितों को जासूस मान कर ये दोनों उन्हें फांसी के तख्ते पर लटकाना चाहते हैं।' यह सुन राज-दरबार में सन्नाटा छा गया। क्षण-भर को राजा का पारा भी सातवें आसमान पर चढ़ गया, लेकिन शांति से सोचा तो राजकुमारी की चतुराई पर उन्हें गर्व हुआ। राजकुमारी ने उन्हें ब्रह्म-हत्या के पाप से बचा लिया था। तुरंत चारों पंडितों को रिहा कर बाइज्जत विदा किया गया।

सोना और रूपा

एक थी सोना और एक थी रूपा। दोनों सहेलियां थीं। खेलने के लिए कभी वे झील पर जातीं, तो कभी पहाड़ियों पर। कभी नदी पर जातीं, तो कभी टीलों पर। एक रोज वे लुका-छुपी खेलने वन में गईं। रूपा छिप गई और सोना उसे ढूंढ़ने निकली। ढूंढ़ते-ढूंढ़ते वह भटक गई। वन की भूलभूलैया में खो गई। वह रोने लगी। तभी एक धूर्त साधु वहां से गुजरा। उसने सोना के सुनहरे बाल देख उसे उठा लिया। सोना चीखती-चिल्लाती रही, लेकिन यहां उसकी पुकार सुनने वाला कोई नहीं था। साधु ने उसे गहरे जंगल में ले जा कर एक पेड़ पर बैठा दिया। सोना अपने आप पेड़ पर से उतर न सके और कोई ऊपर चढ़ न सके, इसलिए उसने पेड़ के तने पर मक्खन चुपड़ दिया। साधु रोजाना गांव में भिक्षा मांगने जाता और जो कुछ मिलता वह खाने को ले आता। सोना बेचारी सारा दिन पेड़ पर बैठी रहती। बैठे-बैठे रोया करती। वह और कर भी क्या सकती थी!

सोना का एक भाई था। उसका रिश्ता पड़ोस के गांव की एक लड़की से तय हुआ था। दोनों बड़े हुए तो ब्याह भी तय हो गया। भाई बारात ले कर दुल्हन के गांव जाने को निकला, जो वन के उस पार था। रास्ते में बारात रुकी और सब संबल खाने एक पेड़ की छांव में बैठे। यह पेड़ वही था जिस पर बैठी सोना किसी तरह दिन काट रही थी। उसने नीचे देखा तो वह चकित रह गई। नीचे उसका भाई था और सहेली रूपा भी थी। मां थी

और पिता भी थे। यही नहीं, उनका पालतू कुत्ता मोती भी बारात में मौजूद था। वह दुम हिला कर नाच रहा था। मोती को देख उसका मन भर आया। वह बोली :

मोती रे मोती मैं अकेली रोती
तुम ठहरे बाराती, खाओगे मलाई
पीओगे कोला ओढ़ोगे रजाई
रूपा और मोती मैं ही क्यों रोती
मोती रे मोती मैं अकेली रोती

यह सुन कर सब सोच में पड़ गए। यह आवाज किसकी होगी? यह कौन रो रहा है? रूपा और मोती को इस वीराने में कौन याद कर रहा है? किसी की समझ में कुछ नहीं आया तो सोना फिर से बोली :

मोती रे मोती मैं अकेली रोती
तुम ठहरे बाराती, खाओगे मलाई
पीओगे कोला ओढ़ोगे रजाई
रूपा और मोती मैं ही क्यों रोती
मोती रे मोती मैं अकेली रोती

इस बार रूपा ने आवाज पहचान ली। वह मारे खुशी के चिल्ला उठी, 'सोना!' अब सबने ऊपर देखा, तो पेड़ पर सोना बैठी थी। सबकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। भाई ने, जो दूल्हा बना था, मोती को संकेत दिया। मोती तुरंत तने पर लगा मक्खन चाट गया। अब भाई खुद पेड़ पर चढ़ कर अपनी सोना को नीचे ले आया। सोना रूपा से गले मिलीं। दोनों सहेलियां मिल कर खूब रोईं। फिर खूब हंसीं और हंसते-गाते बारातियों के साथ चल दीं।

शाम को जब भिक्षा मांग कर साधु लौटा तो उस पर गाज ही गिर पड़ी। सोना गायब थी। पेड़ पर लगा मक्खन भी कोई चाट गया था। उसने आंखों से अंगारे बरसाते हुए अगल-बगल देखा। बारातियों की गाड़ी तथा पैरों के निशान देखे और उसी दिशा में चल दिया। तीन घंटे बाद वह दुल्हन के गांव पहुंचा और आवाज लगाई :

ऐ जी लौटा दो मेरी सोना
वरना डंडा ले कर मारूंगा
दे दो जी मेरी प्यारी सोना
वरना सूली पर टांगूंगा

सोना ने उस धूर्त को दूर से ही पहचान लिया। फिर रूपा से कहा, 'यही है वह साधु, जो मुझे उठा ले गया था।' रूपा बोली, 'अब तू चिंता मत कर। मैं उसे ऐसा सबक सिखाऊंगी कि वह नरक में जा कर याद करेगा।'

सोना को घर के पिछवाड़े छिपा कर वह साधु के पास आई और पूछा, 'महाराज, आपको सोना चााहिए न?' साधु बोला, 'अभी चाहिए।' रूपा बोली, 'अभी लाई। आप जरा चारपाई पर विश्राम करें और लड्डू-पेड़े खाएं। तब तक सोना आपके सामने हाजिर हो जाएगी।' साधु प्रसन्न हो गया। लेकिन जैसे ही वह चारपाई पर बैठा कि चारपाई चरमराकर टूट गई। रूपा ने चारपाई भी कुएं की जगत पर बिछाई थी। चारपाई के साथ साधु भी कुएं में गिरा और डूब गया।

नदी लहूलुहान

एक थी जूं। वह नदी पर नहाने गई। नहाते हुए उसका पेट फूटा। लहू की धारा बहने लगी। इससे नदी का पानी लाल हो गया। तभी वहां एक कौआ पानी पीने आया। नदी के पानी का बदला हुआ रंग देख कर उसने पूछा, 'नदी भैया, नदी भैया, आप लहूलुहान कैसे हो गईं?'

नदी बोली :

जूं का पेट फूटा, नदी लहूलुहान
और कौआ काना...

यह सुनते ही कौआ काना बन गया। फिर वह उड़ा और बबूल के पेड़ पर जा बैठा। पेड़ ने पूछा, 'कौए काका, कौए काका! तुम्हारी एक आंख का फ्यूज कैसे उड़ गया?'

कौआ बोला :
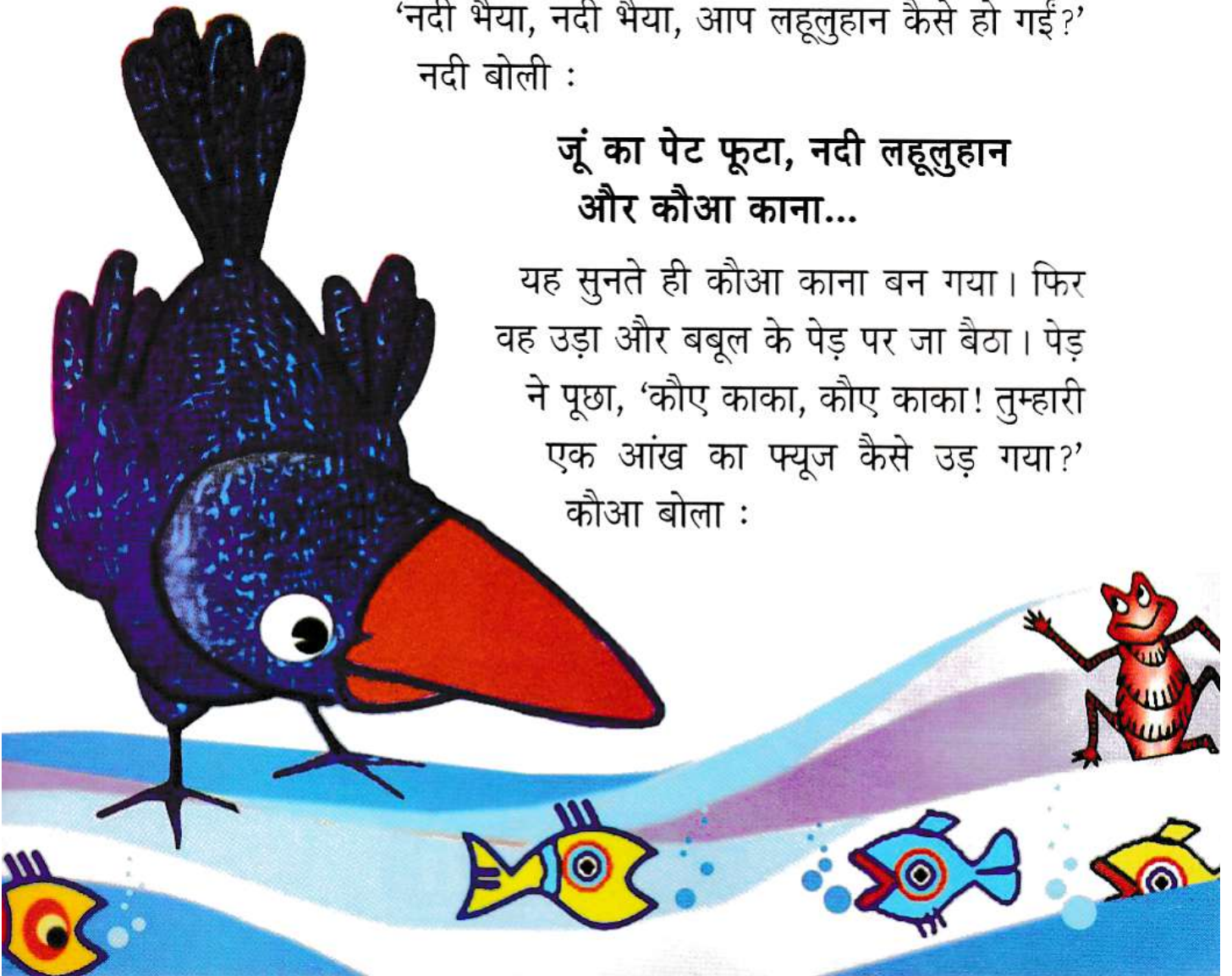
जूं का पेट फूटा, नदी लहूलुहान
कौआ काना और बबूल टेढ़ा...

यह सुनते ही बबूल टेढ़ा हो गया। तभी एक बढ़ई बबूल को काटने पहुंचा। उसने पूछा, 'बबूल बाबा, बबूल बाका! आप टेढ़े कैसे हो गए?' बबूल बोला :

जूं का पेट फूटा, नदी
लहूलुहान
कौआ काना, बबूल हुआ
टेढ़ा और बढ़ई लूला...

यह सुनते ही बढ़ई के एक हाथ ने काम करना बंद कर दिया। फिर वह बनिये की दुकान पर गया। बनिये ने पूछा, 'बढ़ई मियां, बढ़ई मियां! आप लूले कैसे हो गए?' बढ़ई बोला

जूं का पेट फूटा, नदी लहूलुहा
कौआ काना, बबूल हुआ टेढ़ा
बढ़ई लूला और बनिया बहरा...

यह सुनते ही बनिये को दोनों कान निकम्मे हो गए। मिनट-भर बाद एक

ग्वालिन तेल खरीदने आई। उसने चिल्ला कर पूछा, 'सेठजी, सेठजी! आप बहरे कैसे बन गए?' बनिया बोला :

जूं का पेट फूटा, नदी लहूलुहान
कौआ काना, बबूल हुआ टेढ़ा
बढ़ई लूला, बनिया हुआ बहरा
और ग्वालिन नाचे ठुमक-ठुमक...

यह सुनते ही ग्वालिन नाचने लगी। नाचती हुई वह रानी के पास पहुंची। रानी ने पूछा, 'ग्वालिन, ग्वालिन! तू नाच क्यों रही है?' ग्वालिन बोली :

जूं का पेट फूटा, नदी लहूलुहान
कौआ काना, बबूल हुआ टेढ़ा
बढ़ई लूला, बनिया हुआ बहरा
ग्वालिन नचनी और रानी दासी...

यह सुनते ही रानी दासी बन गई और राजा ने सिर पीट लिया।
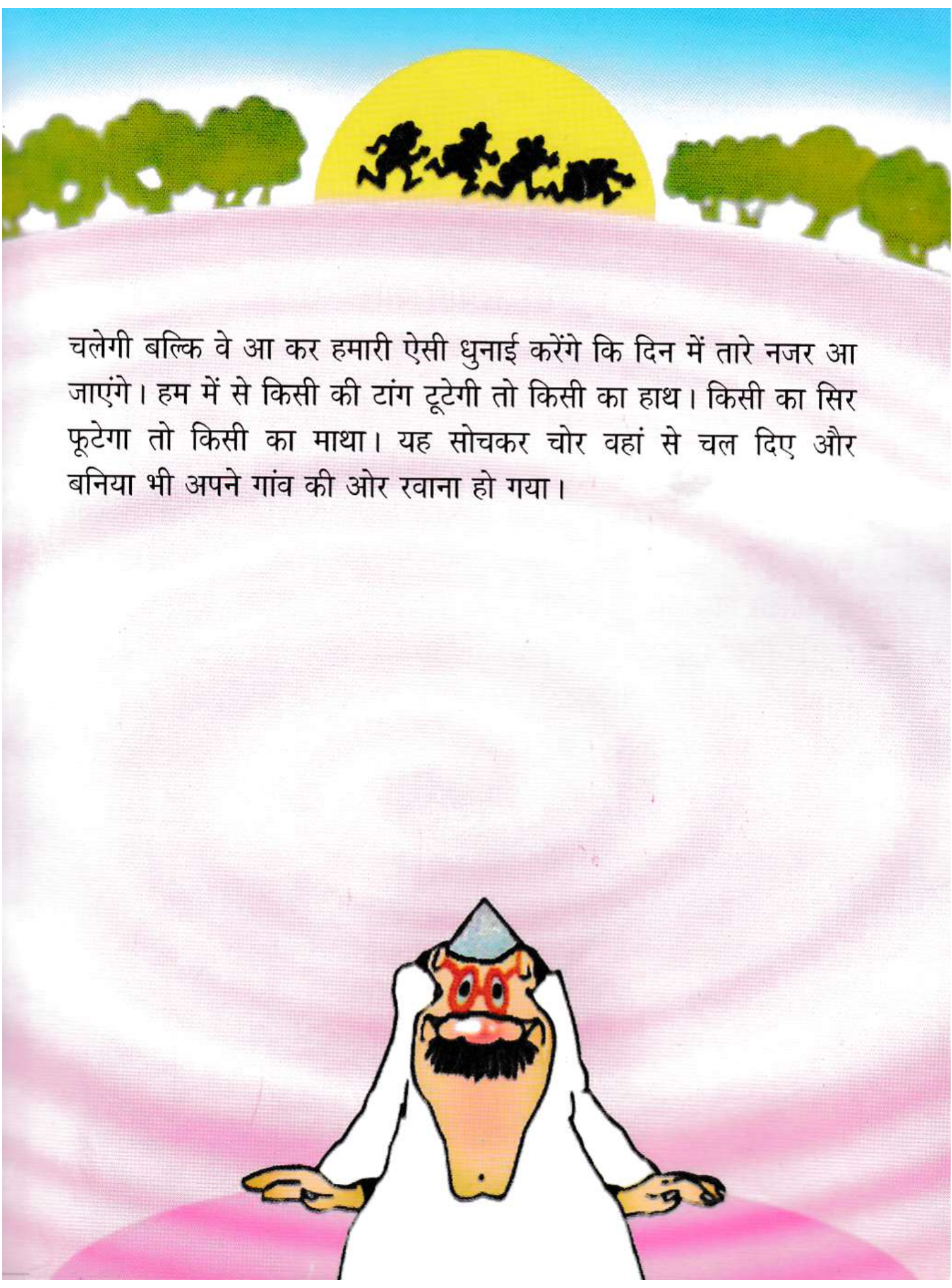
अकल बड़ी या भैंस

एक था बनिया। एक रोज वह गांव जाने को निकला। रास्ते में उसे चार चोर दिखाई दिए। उसने सोचा...किसी तरह इन चोरों को चकमा देना चाहिए। वर्ना मैं अकेला हूं और चोर हैं चार। एक चांटा रसीद कर मुझे लूट लेंगे तो मेरी नाक ही कट जाएगी। लोग कहेंगे, बनिये की अकल से बड़ी भैंस होती है। इतने में चोर बनिये के पास आ पहुंचे। बनिया जिस पेड़ की छांव में खड़ा था, वहीं तने से टिक कर बैठ गया। फिर बोला, 'मेरे बारह साथी हैं। कितने? पूरे बारह। वे पीछे छूट गए हैं। मैं उनकी बाट जोहते हुए ऊब गया हूं। चंद मिनट और इंतजार कर मैं तो आगे बढ़ जाऊंगा। अब कोई किसी की राह कब तक देखे?' उसकी बात सुन कर चोरों के सरदार ने पूछा, 'तुम्हारे बारह साथी कौन-कौन हैं?'

हाजिर जवाब बनिये ने गर्व से बताया :

पीर, बावर्ची, भिस्ती, हुए तीन
तेली, तंबोली, तीसमारखां हुए छह
ऐरा-गैरा और नत्थू खैरा यानी नौ
दारासिंह, पहाड़सिंह, मिलखासिंह हुए हम बारह

यह सुन कर चारों की तो घिग्घी बंध गई। उन्होंने मान लिया कि बनिये के साथी बारह हैं और हम हैं केवल चार। उनके आगे हमारी धौंस नहीं

चलेगी बल्कि वे आ कर हमारी ऐसी धुनाई करेंगे कि दिन में तारे नजर आ जाएंगे। हम में से किसी की टांग टूटेगी तो किसी का हाथ। किसी का सिर फूटेगा तो किसी का माथा। यह सोचकर चोर वहां से चल दिए और बनिया भी अपने गांव की ओर रवाना हो गया।

चोर मचाए शोर

एक था चोर। उचक्कों का सरदार। वह रोजाना एक किसान के घर में घुसता। किसान तो अपनी घरवाली के साथ खेत पर चला जाता था, इसलिए चोर आराम से चूल्हे पर रखी मटकी फोड़ता और उसमें पका हुआ खाना खा कर लौट जाता। लाख कोशिशें करने पर भी वह पकड़ में नहीं आता था।

आखिर यह चोर था कौन? एक रोज किसान खेत पर गया ही नहीं। वह दिन-भर एक पेड़ की आड़ में छिपा रहा। दोपहर हुई। दबे-पांव एक सियार आया। छत पर चढ़ कर उसने थोड़े कवेलू खिसकाए और अंदर कूद पड़ा। फिर मटकी फोड़ी। खाना खाया। किसान ने यह सब देखा और खुद से बोला...तो यह है चोर नंबर वन! मैंने उसकी जम कर मरम्मत नहीं की
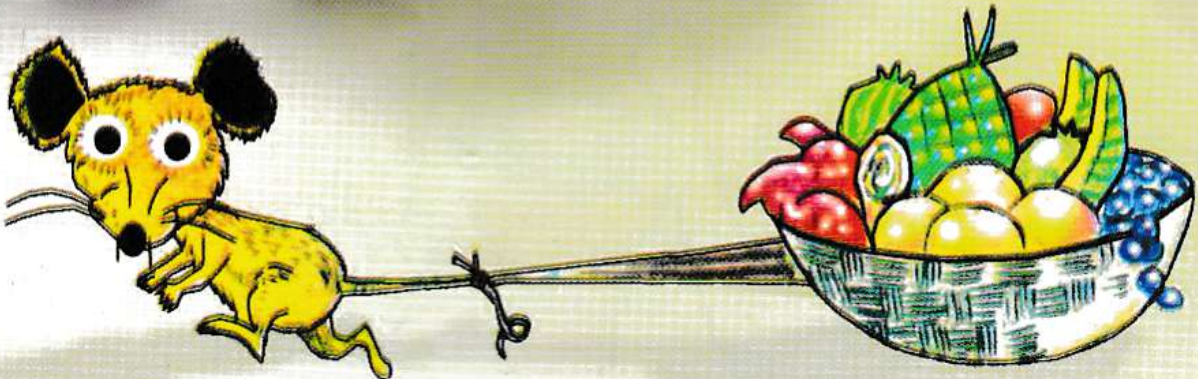
तो मेरा नाम भी हलदेव बलदेव हलाहल नहीं।

जैसे ही सियार डकार लेता हुआ बाहर निकला कि किसान ने उसे जाल में पकड़ पेड़ पर औंधे मुंह लटका दिया। फिर उसने अपनी घरवाली से कहा, 'सुनती हो चंपाकली! आज हम सियार को मिर्च का कलेवा खिलाएंगे, उसकी आंखों मे मिर्च का काजल डालेंगे और मिर्च का शरबत भी पिलाएंगे। हमारा मेहमान जो ठहरा!'

किसान किलो-भर मिर्च खरीदने बाजार गया और यहां सियार के होश उड़ गए। लेकिन उसने हिम्मत से काम लिया। सोचा, वह पट्ठा मुझे मिर्च खिला-खिला कर मार डाले, इससे पहले मुझे कोई उपाय करना होगा! शायद जान बच जाए!

चंपाकली धान कूट रही थी। कभी इस कभी उस हाथ से मूसल चला-चला कर वह थक गई थी। यह देख सियार बोला, 'चाचीजी, आप क्यों इतना परेशान हो रही हैं? धान मैं कूट देता हूं। मुझे कूटने की आदत जो है।'

चंपाकली थी भोली। वह धूर्त

सियार के चक्कर में आ गई। उसने रस्सी खोल दी। सियार दिखावे के लिए धान कूटने बैठा, लेकिन जैसे ही चंपाकली किसी काम से अंदर गई, वह नौ-दो-ग्यारह हो गया। सियार को गायब हुआ देख चंपाकली झार-झार रोने लगी। 'हाय राम, अब क्या होगा? वो मिर्च ले कर आएंगे तो मैं क्या जवाब दूंगी?'

एक चूहे ने उसका रोना-कलपना सुना। वह अपने बिल से बाहर निकल कर बोला, 'चाची, इसमें रोने की क्या बात है! मैं अभी पकड़ लाता हूं उसे।' चंपाकली ने कहा, 'बेटा, तू सियार को पकड़ लाएगा तो तेरा बड़ा उपकार होगा। मैं तुझे रोज मस्का-मलाई-रबड़ी खिलाऊंगी।'

चूहा बोला, 'तब आप मेरी पूंछ से एक टोकरी बांध कर उसमें कुछ फल रख दें।' चंपाकली ने तुरंत उसकी पूंछ से एक टोकरी बांधी और उसमें चुने हुए फल भी रख दिए।

अब चूहा सियार की खोज में निकल पड़ा। थोड़ी देर बाद उसने सियार की गुफा ढूंढ़ निकाली। भीतर सियार सोया पड़ा था। मारे डर के वह अपनी गुफा के बाहर निकलता ही नहीं था। कहीं किसान उसकी तलाश में आए और फिर से उसे पकड़ कर लटका दे तो? लेकिन अब तक सियार को जोर की भूख लग आई थी। तभी टोकरी घिसटता हुआ चूहा गुफा के प्रवेशद्वार पर आया। टोकरी में बढ़िया सेब थे और अंगूर भी। सीताफल थे और रामफल भी, सियार के मुंह में पानी आ गया। उसने करीब आ कर देखा तो उसे चूहा भी नजर आया। वह तुरंत बोला, 'चूहे महाराज, मुझे दो-चार सेब दोगे? पेट में चूहे कूद रहे हैं।' चूहे ने कहा, 'ऐसे लालमलाल सेब मुफ्त में कोई देता भी है? तुम मेरा एक काम कर दो, मैं तुम्हें दो सेब दे दूंगा। दो काम कर दो, चार सेब दे दूंगा। चार काम...' सियार ने टोका, 'पहले यह तो बताओ कि काम क्या है? चूहे ने बताया, 'मुझे एक गट्ठर

घास चाहिए। तुम उसे अपनी पीठ पर लाद कर मेरे घर पहुंचा दो।' सियार बोला, 'मंजूर है।' तुरंत उसकी पीठ पर घास का गट्ठर लाद कर दोनों चल पड़े। आगे-आगे चूहा, पीछे-पीछे सियार।

कुछ दूर जाने पर चूहा दो पत्थर उठा कर रगड़ने लगा। सियार ने पूछा, 'चूहे महाराज,यह आप क्या कर रहे हैं?' चूहा बोला, 'जादू का खेल दिखा रहा हूं। देखो, पत्थर की रगड़ से चिनगारियां उड़ रही हैं। फुलझड़ी का मजा दे रही हैं।' तभी एक चिनगारी उड़ कर घास के गट्ठर पर पड़ी। घास धू-धू करके जल उठी। साथ सियार की दुम भी जलने लगी। वह चिल्लाया, 'जल गई, मेरी दुम जल गई। बचाओ! बचाओ!' चूहा डांटते हुए बोला, 'इसमें चिल्लाने की क्या बात है? तुम्हारी दुम जली है, तुम तो नहीं जले हो न?' चीखता-चिल्लाता हुआ सियार ऐसा भागा कि सीधा जा कर तालाब में कूद पड़ा।

थोड़ी देर बाद चूहा हकीम बन कर निकला। गुफा के पास से गुजरते हुए वह बोल रहा था :

दांत का हो या आंत का हर दर्द भगा दूं
भूत का हो या प्रेत का हर साया मिटा दूं
मैं ठहरा हकीम लुकमान का दामाद
दिलजला हो या दुमजला शफा दिला दूं

सुन कर सियार बाहर निकला। फिर बोला, 'मियां, दवा दोगे?' चूहे ने भोले बन कर पूछा, 'कैसी दवा चाहिए?' सियार ने तुरंत कहा, 'जले पर लगाने की दवा।' चूहा बोला, 'लो यह मरहम।' सियार खुश हो गया। उसे क्या पता था कि वह मरहम पिसी हुई मिर्च से बना है। जैसे ही उसने लगाया, वह फिर से चीखने-चिल्लाने लगा। 'अरे यह कैसा मरहम है, जो जले पर नमक छिड़कता है।' चूहे ने कहा, 'यह स्पेशल मरहम है। इसकी दो डिबिया खरीदने पर एक डिबिया मुफ्त।' सियार रोता-बिलखता हुआ ऐसा भागा कि सीधा जा कर नदी में बैठ गया।

थोड़ी देर बाद चूहा भी वहीं पहुंच कर एक लकड़ी काटने लगा। सियार ने कहा, 'चूहे महाराज, कुछ खाना-वाना मिलेगा?' चूहे ने बताया, 'इसीलिए तो मैं नाव बना रहा हूं। हम नदी के उस पार जाएं तो वहां चिकन फ्राई, चिकन टिक्का, चिकन बिरयानी, चिकन कबाब, चिकन मुगलाई, चिकन तंदूरी मिल सकती है।' सियार के मुंह में पानी आ गया। बोला, 'तब मुझे भी नाव बनाना सिखाओ न!' चूहे ने कहा, 'लकड़ी की नाव बनाना थोड़ा मुश्किल है, इसलिए तुम घास की नाव बनाओ।' सियार ने घास की नाव बनाई और चूहे ने लकड़ी की। दोनों ने अपनी-अपनी नाव पानी में उतारी। थोड़ी दूर जा कर घासवाली नाव डूब गई। सियार नदी में गोते खाने लगा। लकड़ी की नाव पानी में तैरती रही और चूहा उसमें नाचता रहा। मिनटों में सियार अधमरा हो गया। अब चूहा उसके गले में रस्सी डाल उसे घसीट कर किसान के घर ले आया। फिर किसान की घरवाली चंपाकली से कहा, 'चाची, आपकी सेवा में चोर नंबर वन हाजिर है। अब आप रोना नहीं।'

नल देव और जल देव

एक थी तेलिन। एक रोज उसकी इच्छा लड्डू खाने की हुई। उसने शुद्ध घी डाल कर चूरमा के लड्डू बनाए। थोड़ी देर बाद तेली घर लौटा और खाने बैठा। तेलिन ने उर्द की दाल ज्वार की रोटी के साथ परोस दी। तभी तेली की नजर लड्डूओं पर पड़ी। वह बोला, 'वाह, हम दाल-रोटी खाएंगे तो ये लड्डू कौन खाएगा?' तेलिन ने कहा, 'यह तो मैंने नल देव के लिए चढ़ावा बनाया है।' और देखते ही देखते सारे लड्डू चट कर गई। तेली ने सोचा... यह मुन्ने की मां है या खाऊ गली की खाऊ? प्रसाद में से मुझे एक लड्डू भी नहीं दिया। कोई बात नहीं। वह नहला है तो मैं दहला हूं।
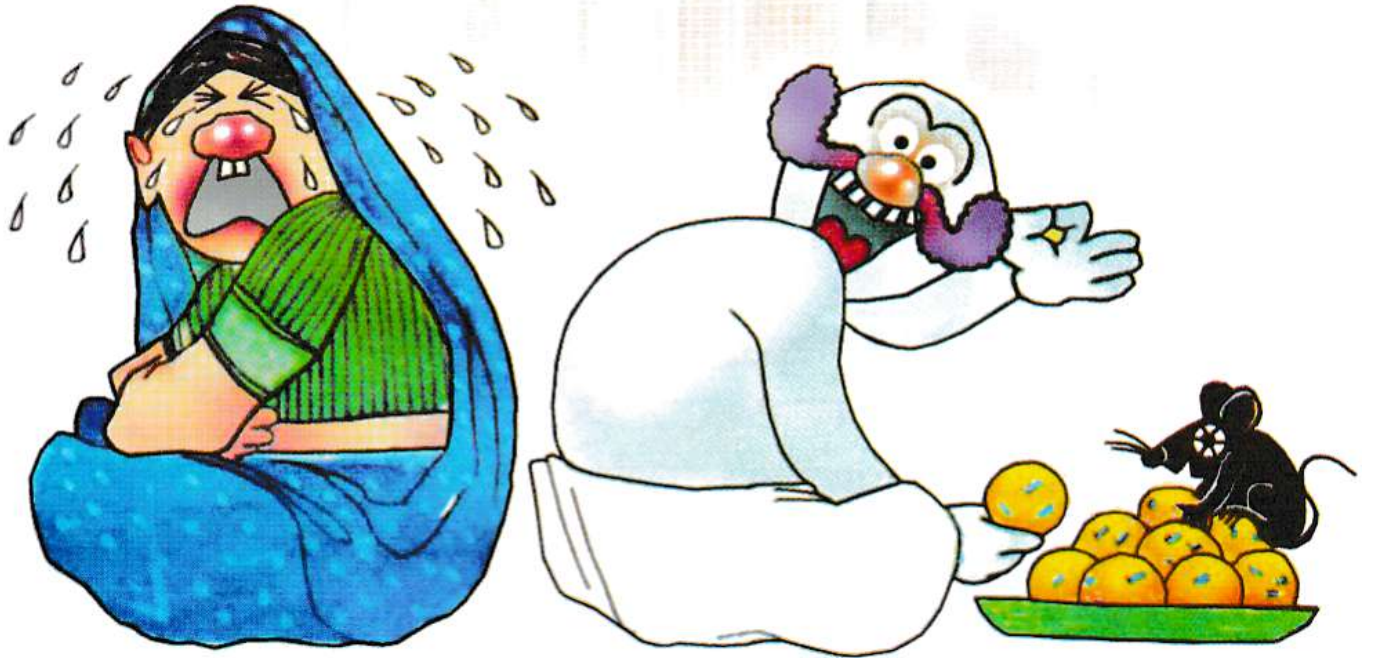
दूसरे रोज तेली ने कहा, 'आज मुझे जल देव पर चढ़ावा चढ़ाना है। क्या बनाओगी?' तेलिन प्रसन्न हो कर बोली, 'मोदक।' इस बार उसने शुद्ध घी के साथ बादाम-पिस्ते-केसर डाल कर मोदक बनाए। उसे यकीन था, पतिदेव दो-चार तो उसे देंगे ही। इस कारण उसने अपने लिए अलग से रसोई भी नहीं बनाई। अब तेली खाने बैठा। उसे चटखारे ले कर मोदक खाते देख तेलिन ने कहा, 'थोड़े मुझे भी दो न।' तेली बोला, 'तुम तो दूर ही रहना। पास आओगी तो मेरे जल देव नैवेद्य स्वीकार नहीं करेंगे।' तेली अकेला ही सारे लड्डू चट कर गया और तेलिन बेचारी मुंह बाएं देखती रह गई।

ऊंट का पैर सड़निया

एक थी चींटी। वह अपनी मस्ती में चली जा रही थी। रास्ते में ऊंट ने उस पर पांव रख दिया। नन्ही-सी चींटी की आधी जान निकल गई। बाकी आधी निकले, इससे पहले उसने शाप दिया

'ऊंट का पैर सड़निया'

तुरंत ऊंट का पांव सड़ गया। सड़े हुए पांववाला ऊंट पीपल की छांव में आ बैठा। पीपल ने पूछा, 'क्यों जी, तुम्हारा पैर कैसे सड़ गया जी? कल तो भला-चंगा था। यह अचानक क्या हो गया?' ऊंट बोला, 'मुझे चींटी दीदी का शाप लगा है

ऊंट का पैर सड़निया
पीपल के पात झड़निया'

तुरंत पीपल के सारे पत्ते झड़ कर हवा में लहराने लगे। तभी वहां एक चिड़िया आई। पीपल पर एक भी पत्ता न देख उसने पूछा, 'पीपल दादा, अभी-अभी तो आपके हरे भरे पत्ते डोल रहे थे। पलक झपकते ही यह क्या गजब हो गया? सारे पत्ते कैसे झड़ गए?' पीपल बोला, 'क्या तुम नहीं जानती, चिड़िया चाची! मुझे चींटी दीदी का शाप लगा है

ऊंट का पैर सड़निया
पीपल के पात झड़निया
चिड़िया के पंख गिरनिया'

तुरंत चिड़िया के पंख गिर गए। वह बेबस हो गई। उसे जोरों की प्यास लगी थी। डगमग-डगमग डोलती हुई वह पैदल ही दरिया किनारे पहुंची। चिड़िया को बिना पंख देख दरिया सोच में पड़ गया। उसने पूछा, 'चिड़िया चाची, यह मैं क्या देख रहा हूं! अभी घंटे-भर पहले तुम उड़ती हुई यहां पानी पीने आई थीं। किसने काट लिए तुम्हारे पंख?' चिड़िया बोली, 'क्या आप नहीं जानते दरिया दादा? मुझे चींटी दीदी का शाप लगा है

ऊंट का पैर सड़निया
पीपल के प झड़निया
चिड़िया के गिरनिया
दरिया का सुखनिया'

तुरंत दरिया का पानी सूख गया। कुछ देर बाद वहां एक लोमड़ी पानी पीने पहुंची। दरिया में पानी की एक भी बूंद न देख कर उसने पूछा, 'दरिया दादा, कल तो तुम्हारे दोनों किनारे
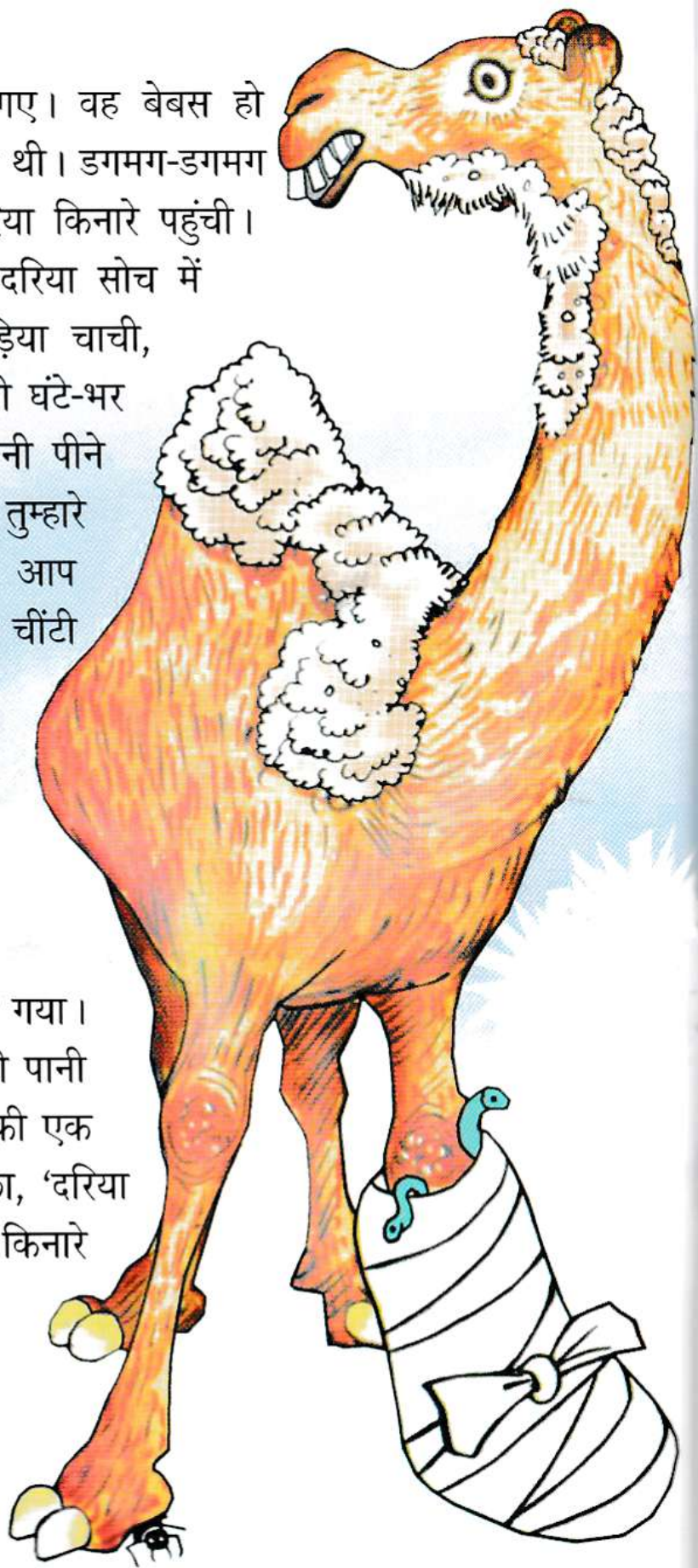
पानी से लबालब थे, आज सूखे कैसे? यह चमत्कार कैसे हुआ?' दरिया बोला, 'लोमड़ी आपा, क्या आप कुछ भी नहीं जानतीं? मुझे चींटी दीदी का शाप लगा है

ऊंट का पैर सड़निया
पीपल के पात झड़निया
चिड़िया के पंख गिरनिया
दरिया का पानी सुखनिया
लोमड़ी की पूंछ गुमनिया'

तुरंत लोमड़ी की पूंछ लोमड़ी से अलग हो कर गुम हो गई। लोमड़ी जंगल की ओर चल पड़ी। रास्ते में उसे एक ग्वाला मिला। वह बोला, 'लोमड़ी, आपा, यह कैसा कलियुग है! जरा आंख लगी नहीं कि चोरों ने सेंध लगाई। यह तो बताओ, तुम्हारी पूंछ कौन चुरा ले गया?' लोमड़ी बोली, 'ग्वाले भैया, क्या आपको कुछ भी नहीं मालूम? मुझे चींटी दीदी का शाप लगा है

ऊंट का पैर सड़निया
पीपल के पात झड़निया
चिड़िया के पंख गिरनिया
दरिया का पानी सुखनिया
लोमड़ी की पूंछ गुमनिया
ग्वाले के कान बहरनिया'

तुरंत ग्वाला बहरा बन गया। अपनी गायों को चराता हुआ वह गांव की ओर चला। रास्ते में उसे एक दरजिन मिली। उसने ग्वाले से झील का रास्ता पूछा, ग्वाले ने नहीं सुना तो वह चिल्लाई, 'ग्वाले भैया, तुम बहरे कब से हो गए?' ग्वाला बोला, 'भाभी, तुम तो सारे गांव की खबरें रखती हो।

यही नहीं मालूम कि मुझे चींटी दीदी का शाप लगा है?

ऊंट का पैर सड़निया
पीपल के पात झड़निया
चिड़िया के पंख गिरनिया
दरिया का पानी सुखनिया
लोमड़ी की पूंछ गुमनिया
ग्वाले के कान बहरनिया
दरजिन बनी नचनिया'

तुरंत दरजिन नाचने लगी। छम छमाछम छम। छम छमाछम छम। नाचते हुए वह झील पर पहुंची। वहां उसे एक पनिहारिन मिली। दरजिन को नाचते देख उसने पूछा, 'सखी, आज तुम्हें क्या हो गया है? कहीं तुम पर किसी चुड़ैल का साया तो नहीं पड़ गया?' दरजिन ने कहा, 'बहन, आंख-कान खुले रख कर चला करो, ताकि पता चले कि मुझे भी चींटी दीदी का शाप लगा है

ऊंट का पैर सड़निया
पीपल के पात झड़निया
चिड़िया के पंख गिरनिया
दरिया का पानी सुखनिया
लोमड़ी की पूंछ गुमनिया
ग्वाले के कान बहरनिया

दरजन बनी नचनिया
पनिहारिन हो गई बकनिया'

तुरंत पनिहारिन ने बक-बक, झक-झक, बक-झक शुरू कर दी। ऊटपटांग बोलती हुई वह गांव की चौपाल के पास से गुजरी। वहां बैठे बड़े-बूढ़ों में से एक ने पूछा, 'अरे पनिहारिन बेगम, क्या आसमान टूट पड़ा? जमीन फट गई? आज यों पागल की तरह बड़बड़ा क्यों रही हो?' पनिहारिन बोली, 'लो, यह चौपालवाले भी मेरी तरह बेखबर हैं। अरे मियां, मुझे तो चींटी दीदी का शाप लगा है

ऊंट का पैर सड़निया
पीपल के पात झड़निया
चिड़िया के पंख गिरनिया
दरिया का पानी सुखनिया
लोमड़ी की पूंछ गुमनिया
ग्वाले के कान बहरनिया
दरजन बनी नचनिया
पनिहारिन हो गई बकनिया
मर्दों की मूंछें मुंडनिया'

तुरंत चौपाल में बैठे सारे पुरुष बिना मूंछों के हो गए। फिर वे सब मिल कर नाचने-गाने लगे

ऊंट का पैर सड़निया
पीपल के पात झड़निया

चिड़िया के पंख गिरनिया
दरिया का पानी सुखनिया
लोमड़ी की पूंछ गुमनिया
ग्वाले के कान बहरनिया
दरजन बनी नचनिया
पनिहारिन हो गई बकनिया
मर्दों की मूंछें मुंडनिया
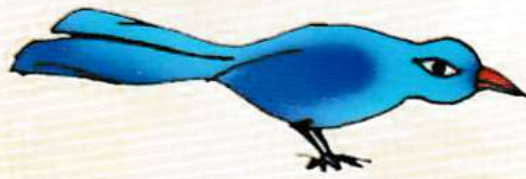
कौआ बोला कांव-कांव-कांव

एक था कौआ और एक थी मैना। एक रोज दोनों नीम की छांव में खेल रहे थे। खेलते-खेलते कौवे को एक कौड़ी मिली और मैना को एक मोती मिला। वह खुशी के मारे कुप्पा हो कर बोली, 'जरा देखो तो सही कौवे काका, मुझे क्या मिला है!' कौवे ने देखा। मोती असली थी। सूरज की कोमल किरणों में जगमगा रहा था। उसने सोचा...मेरी किस्मत में फूटी कौड़ी और मैना की किस्मत में जगमग मोती! नामुमकिन।' वह तुरंत मैना का मोती छीन कर पेड़ पर जा बैठा। मैना मुंह बाएं देखती रह गई। फिर बोली, 'कौवे काका कौवे काका! मेरा मोती दो न!' कौए ने कहा, 'मोती तो मेरी चोंच की शोभा है। यह फूटी कौड़ी ले और उसी से खेल।' उसने अपनी कौड़ी नीचे फेंक दी। यह देख मैना भड़क उठी। उसने तुरंत नीम से शिकायत की, 'नीम...नीम! कौए काका को उड़ाओ न!' नीम ने कहा, 'भला मैं क्यों उड़ाऊं?' वह बोली :

काले कौए ने मेरा मोती छिना
मांगूं हाथ जोड़ फिर भी देता नहीं

यह सुन कर नीम ने कहा, 'कौए काका तो मेरे बचपन के दोस्त हैं मेरी छांव में खेल कर बड़े हुए हैं। उनको उड़ा कर मैं क्यों पंगा लूं? मेरा उनसे

कोई टंटा थोड़े ही है!' मैना पहुंची बढ़ई के घर और बोली, 'बढ़ई...बढ़ई, नीम को काटो न!' बढ़ई ने कहा, 'भला मैं नीम को क्यों काटूं?' मैना बोलीः

नीम कौए को उड़ाता नहीं
काले कौए ने मेरा मोती छीना
मांगूं हाथ जोड़ फिर भी देता नहीं

यह सुन बढ़ई ने कहा, 'मैं नीम को नहीं काट सकता। मेरे पास फालतू समय नहीं है।' मैना पहुंची राजा के पास और बोली, 'राजा...राजा, बढ़ई को सजा दो न।' राजा ने कहा, 'भला हम उसे सजा क्यों दें?' मैना बोली :

बढ़ई नीम को काटता नहीं
नीम कौए को उड़ाता नहीं
काले कौए ने मेरा मोती छीना
मांगूं हाथ जोड़ फिर भी देता नहीं

यह सुन राजा ने कहा, 'हमारे पास जरा भी समय नहीं है। तुम्हारे पिद्दी से पचड़े में हम कैसे पड़ें!' मैना पहुंची रानी के पास और बोली, 'रानी... रानी, राजा से रूठो न!' रानी ने कहा, 'भला हम राजा से क्यों रूठें?' मैना बोली :

राजा बढ़ई को सजा देता नहीं
बढ़ई नीम को काटता नहीं
नीम कौए को उड़ाता नहीं
काले कौए ने मेरा मोती छीना
मांगूं हाथ जोड़ फिर भी देता नहीं

यह सुन रानी ने कहा, 'मैं तो राजा की चहेती रानी हूं। मैं राजा से नहीं रूठ सकती।' मैना पहुंची चूहे के पास और बोली, 'नन्हे चूहे...नन्हे चूहे,

रानी की चुनरी कुतर डालो न!'
चूहे ने कहा, 'भला मैं चुनरी क्यों
कुतर डालूं?' मैन ने कहा

रानी राजा से रूठती नहीं
राजा बढ़ई को सजा देता नहीं
बढ़ई नीम को काटता नहीं
नीम कौए को उड़ाता नहीं
काले कौए ने मेरा मोती छीना
मांगूं हाथ जोड़ फिर भी देता नहीं

यह सुन चूहे ने कहा, 'ना बाबा
ना! रानी तो गणेश जी के साथ
रोज मेरी भी पूजा करती है। मैं

उसका नुकसान कैस कर सकता हूं!' मैना पहुंची बिल्ली के पास और बोली, 'बिल्ली मौसी...बिल्ली मौसी, चूहे को खा जाओ न!' बिल्ली ने कहा, 'भला मैं चूहे को क्यों खाऊं?' मैना बोली :

चूहा रानी की चुनरी कुतरता नहीं
रानी राजा से रूठती नहीं
राजा बढ़ई को सजा देता नहीं
बढ़ई नीम को काटता नहीं
नीम कौए को उड़ाता नहीं
काले कौए ने मेरा मोती छीना
मांगूं हाथ जोड़ फिर भी देता नहीं

यह सुन बिल्ली ने कहा, 'इस समय मुझे भूख नहीं लगी है। चूहे को मैं कैसे खाऊं?' मैना पहुंची कुत्ते के पास और बोली, 'कुत्ते भैया...कुत्ते भैया, बिल्ली को काटो न!' कुत्ते ने कहा, 'भला मैं बिल्ली को क्यों काटूं?' मैना बोली :

बिल्ली चूहे को खाती नहीं
चूहा रानी की चुनरी कुतरता नहीं
रानी राजा से रूठती नहीं
राजा बढ़ई को सजा देता नहीं
बढ़ई नीम को काटता नहीं
नीम कौए को उड़ाता नहीं
काले कौए ने मेरा मोती छीना
मांगूं हाथ जोड़ फिर भी देता नहीं

यह सुन कुत्ते ने कहा, 'मेरी कुतिया रानी ने दस पिल्ले जने हैं। उन्हें

देखने के लिए जाने की मुझे फुरसत नहीं। तेरे चक्कर में मैं क्यों पड़ूं!' मैना पहुंची डंडे के पास और बोली, 'डंडे महाशय...डंडे महाशय, कुत्ते पर टूटो न!' डंडे ने कहा, 'भला मैं कुत्ते पर क्यों टूटूं?' मैना बोली :

कुत्ता बिल्ली को काटता नहीं
बिल्ली चूहे को खाती नहीं
चूहा रानी की चुनरी कुतरता नहीं
रानी राजा से रूठती नहीं
राजा बढ़ई को सजा देता नहीं
बढ़ई नीम को काटता नहीं
नीम कौए को उड़ाता नहीं
काले कौए ने मेरा मोती छीना
मांगूं हाथ जोड़ फिर भी देता नहीं
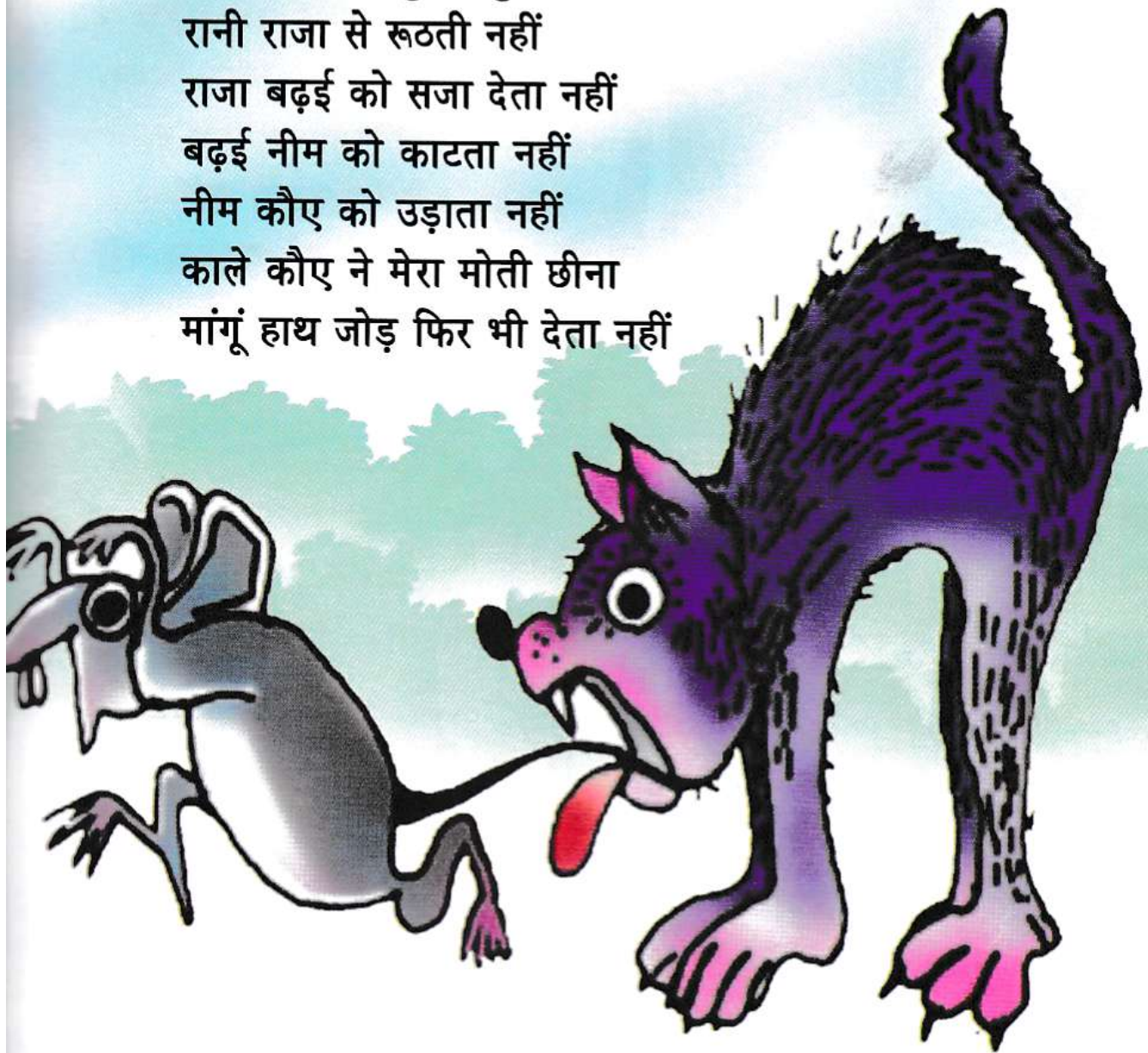
यह सुन डंडे ने कहा, 'पहले मुझे इस नगर के सारे चोर-चकारों को सजा देना दे। फिर कुत्ते की बारी।' मैना पहुंची आग के पास और बोली, 'अग्नि देवा...अग्नि देवा, डंडे को जलाओ न!' आग ने कहा, 'भला मैं डंडे को क्यों जलाऊं?' मैना बोली :

डंडा कुत्ते पर टूटता नहीं
कुत्ता बिल्ली को काटता नहीं
बिल्ली चूहे को खाती नहीं
चूहा रानी की चुनरी कुतरता नहीं
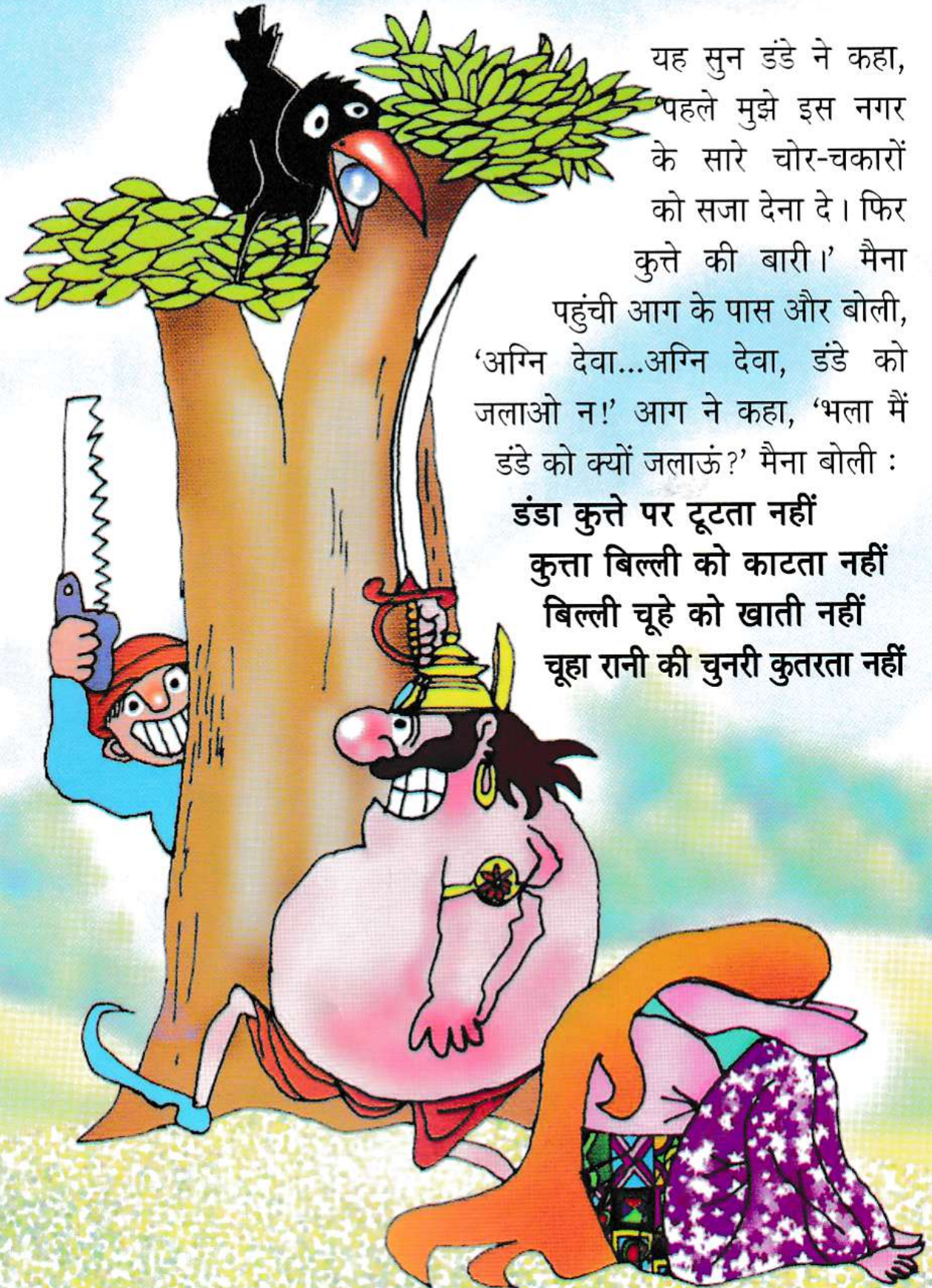
रानी राजा से रूठती नहीं
राजा बढ़ई को सजा देता नहीं
बढ़ई नीम को काटता नहीं
नीम कौए को उड़ाता नहीं
काले कौए ने मेरा मोती छीना
मांगूं हाथ जोड़ फिर भी देता नहीं

यह सुन आग ने कहा, 'कई गरीबों की झुग्गी-झोपड़ियों में चूल्हें नहीं जलते। मैं उन चूल्हों को जलाऊं या तेरे डंडे को?' मैना पहुंची नदी के पास और बोली,
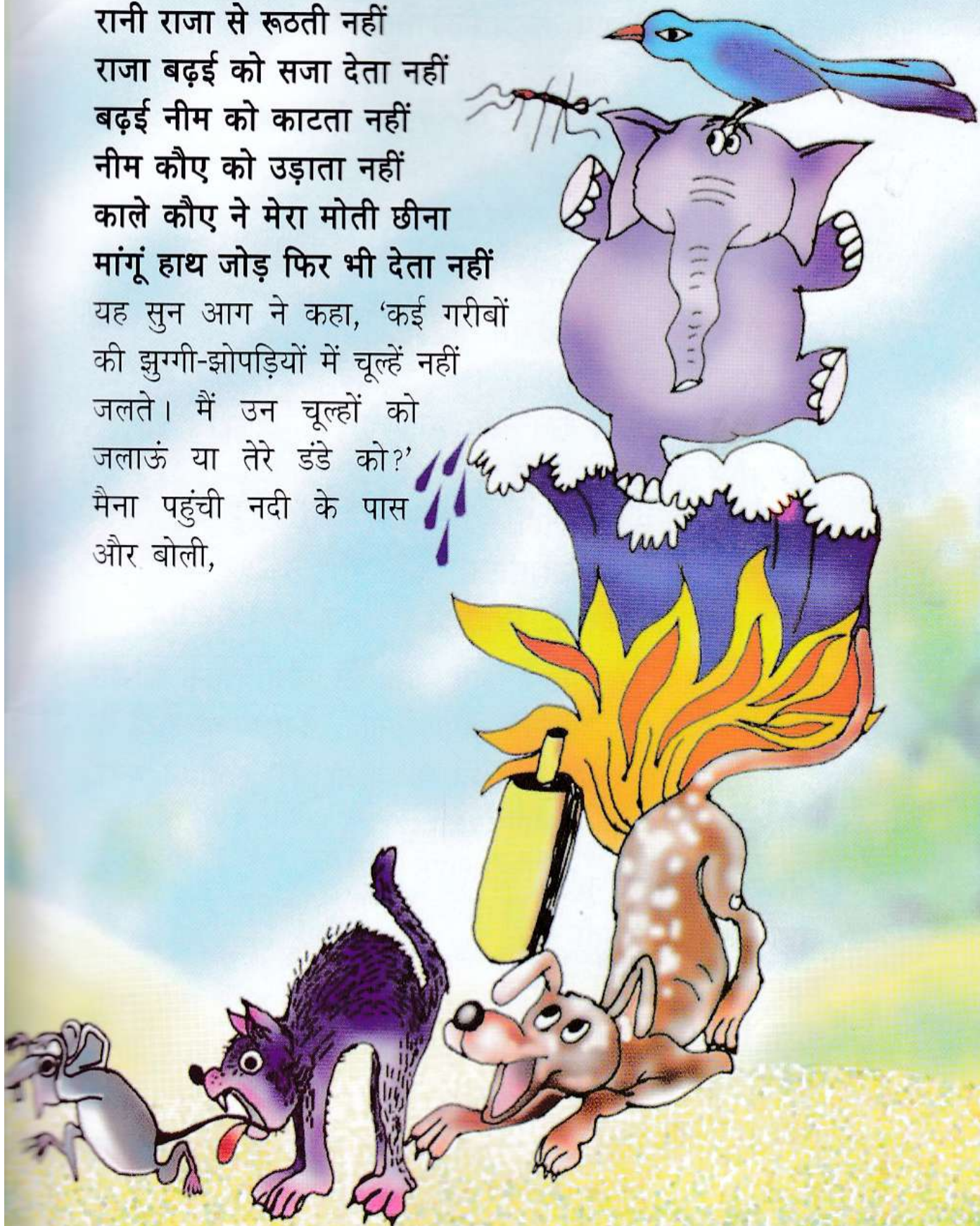
'नदी बहना...नदी बहना, आग को बुझाओ न!' नदी ने कहा, 'भला मैं आग को क्यों बुझाऊं?' मैना बोला :

आग डंडे को जलाती नहीं
डंडा कुत्ते पर टूटता नहीं
कुत्ता बिल्ली को काटता नहीं
बिल्ली चूहे को खाती नहीं
चूहा रानी की चुनरी कुतरता नहीं
रानी राजा से रूठती नहीं
राजा बढ़ई को सजा देता नहीं
बढ़ई नीम को काटता नहीं
नीम कौए को उड़ाता नहीं
काले कौए ने मेरा मोती छीना
मांगूं हाथ जोड़ फिर भी देता नहीं

यह सुन नदी ने कहा, 'मेरा पहला काम प्यासों की प्यास बुझाना है। इस समय मैं वही कर रही हूं। जा, फिर कभी आना।' मैना पहुंची हाथी के पास और बोली, 'हाथी...हाथी, नदी को पी जाओ न!' हाथी ने कहा, 'भला मैं नदी को क्यों पी जाऊं?' मैना बोली :

नदी आग बुझाती नहीं
आग डंडे को जलाती नहीं
डंडा कुत्ते पर टूटता नहीं
कुत्ता बिल्ली को काटता नहीं
बिल्ली चूहे को खाती नहीं
चूहा रानी की चुनरी कुतरता नहीं

रानी राजा से रूठती नहीं
राजा बढ़ई को सजा देता नहीं
बढ़ई नीम को काटता नहीं
नीम कौए को उड़ाता नहीं
काले कौए ने मेरा मोती छीना
मांगूं हाथ जोड़ फिर भी देता नहीं
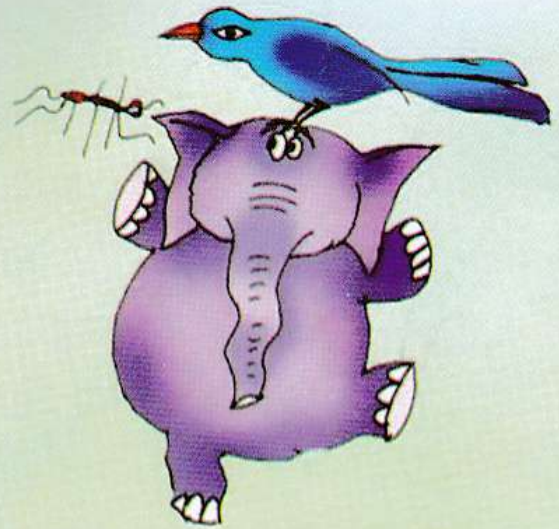
यह सुन हाथी ने कहा, 'मैं नदी को पी जाऊं, तो फिर स्नान करने कहां जाऊंगा? कुएं में?'

मैना निराश हो कर रोने लगी तो एक मच्छर को उस पर दया आ गई। वह बोला, 'मैना दीदी...मैना दीदी, जो काम बड़े-बड़े हाथी नहीं कर पाते वह मुझ जैसे छोटे-से जीव कर देते हैं। मैं अभी हाथी की खबर लेता हूं।'

मच्छर उड़ा और जैसे ही भिनभिनाता हुआ हाथी के कान में घुसने लगा कि हाथी घबरा कर बोल उठा, 'छोटे मियां! हमारे कान में घुसने की जहमत आप क्यों उठाते हैं? हम अभी नदी को पी जाएंगे।' नदी ने यह सुना तो उसने कहा, 'मेरा पानी पीने की जरूरत नहीं। मैं अभी आग बुझाती हूं।' आग बमकी, 'खबरदार जो किसी ने मुझे छुआ। मैं डंडे को जलाने जा रही हूं।' डंडा बोल उठा, 'मुझे जलाने से तुम सब घाटे में रहोगे। इसलिए मुझे जाने दो। मैं कुत्ते की ऐसी धुनाई करूंगा कि...' कुत्ते ने उसे बीच ही में टोका, 'मेरी धुनाई करने की क्या जरूरत है! मैं बिल्ली की खाल उधेड़ डालूंगा।' बिल्ली बोली, 'ठहरो। मैं अभी चूहे का कलेवा करती हूं।' चूहा तुरंत दौड़ा महल की ओर, 'सवाल सिर्फ रानी की चुनरी कुतरने का है न! अभी कुतर खाऊंगा।' रानी चिल्लाई, 'नहीं...मुझे राजा से रूठना मंजूर है।' राजा दहाड़ा, 'किसलिए? हम अभी बढ़ई को फांसी पर लटका देते हैं।' बढ़ई मारे डर के भागा, 'मैं तो चला नीम काटने।' उसे आता देख नीम ने

प्रार्थना की, 'मुझे मत काटना। मैं अभी कौए को उड़ाता हूं।' यह कह कर नीम डोलने लगा। उसकी शाखें झूमनें लगीं। पत्ते खड़खड़ाने लगे। अब कौए के लिए बैठे रहना मुश्किल था। वह कांव-कांव करता हुआ ऐसा उड़ा कि उसका मुंह खुल गया। चोंच में से मोती सरक कर नीचे गिर गया। मैना ने उसे तुरंत उठा लिया और अपने घोंसले में जा बैठी।

अब कौन सुनाए किस्से-कहानी!
काशी गई हमारी नानी!!

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
NATIONAL BOOK TRUST, INDIA